के.वि. आई.आई.टी. कानपुर

शिक्षक विशेषांक

सितंबर 2020

आकर्षण बिन्दु

1.प्राचार्य का संदेश

2.मुख्याध्यापिका का संदेश

3.कक्षा 1 का स्वागत

4.शिक्षा

5.हिन्दी भाषा का विकास

6.Reading habit

7.Innovative education

8. Teacher's day poem

9. Best online teaching practices

10. Our teachers our hero

11. Our Life Poem

12.ई शिक्षा

13.नयी पहल

14.वर्चुअल 15 अगस्त

15.वर्चुअल खेल दिवस

16.हिन्दी पखवाड़ा

17.शिक्षक दिवस

18.लोक कला

19. वर्चुअल संगीत

20.ई पुस्तकालय

21. मीडिया के पन्नों में

सादर आभार

श्री.डी.के.द्विवेदी, उपायुक्त

के.वि.सं.,लखनऊ संभाग

श्रीमती प्रीति सक्सेना,

सहायक आयुक्त,के.वि.सं.,लखनऊ संभाग

श्री टी.पी.गौड़,

सहायक आयुक्त,के.वि.सं.,लखनऊ संभाग

श्री अनुराग यादव,

सहायक आयुक्त,के.वि.सं.,लखनऊसंभाग

श्री.आर.एन.वडालकर,प्राचार्य

प्राचार्य की कलम से

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर केंद्रीय विद्यालय, आई.आई.टी., कानपुर द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'प्रवाह' विद्यालय के रचनाधर्मी, नवोन्मेषी एवं निष्ठावान शिक्षकों के शिक्षा के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता का ही प्रतिबिंब है|

कोविड-19 महामारी के प्रसार के कारण उत्पन्न विषम परिस्थितियों में शिक्षण कार्य की रूपरेखा के संबंध में अनेक प्रश्न उठ रहे थे तथा समस्त प्रश्न अनुत्तरित थे| इस क्षणिक निराशाजन्य अंधकार में हमारे शिक्षकों ने दृढ संकल्प के प्रकाश से नित नयी राहों का अन्वेषण करते हुए 'गुरु' शब्द की सार्थकता सिद्ध की है| उन्होंने नवीन तकनीक एवं विभिन्न संचार साधनों के समुचित उपयोग संबंधी कौशलों का विकास किया तथा शिक्षण कक्ष की सीमाओं को असीम विस्तार प्रदान किया| अप्रतिम सकारात्मकता का परिचय देते हुए शिक्षकों ने विद्यार्थियों को बौद्धिक, मानसिक संबल प्रदान करने हेतु जो प्रभावी प्रयास किये, वे निश्चय ही वंदनीय हैं|

विकास की यह यात्रा शाश्वत है तथा सफलता के 'नये क्षितिज' को स्पर्श करना अभी शेष है| अतः समस्त ऊर्जस्वित, प्रतिबद्ध एवं दृढ संकल्पित शिक्षकों के प्रति समर्पित हैं कुछ पंक्तियाँ -

लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा |
लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा ||

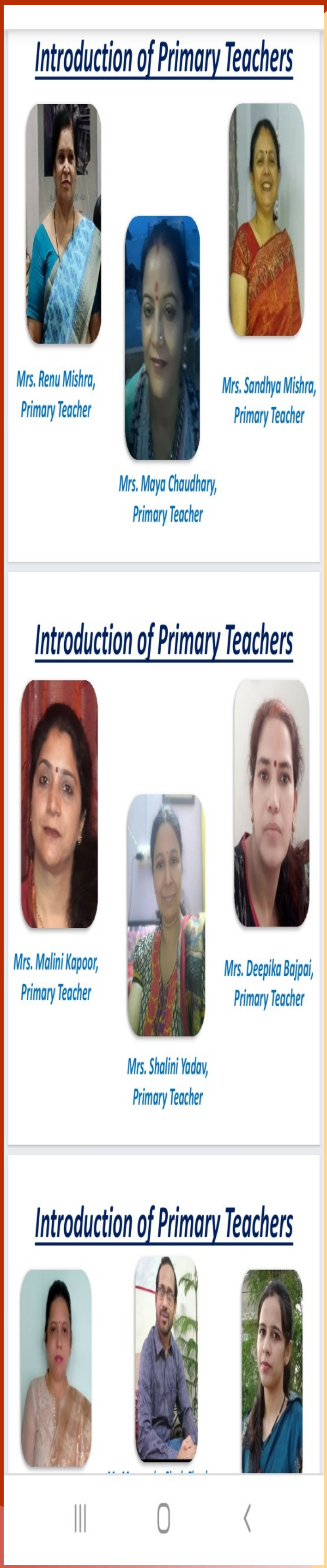

MESSAGE FROM THE HEAD MISTRESS

SMT.VINEETA TIWARI

A good teacher can ignite the imagination, inspire hope and instil a love of learning in a child.

It gives me immense pleasure to greet and wish all my teachers on this auspicious occasion of Teacher's Day from core of my heart. We celebrate Teacher's Day because we value our teachers and deeply appreciate their commitment to teaching and to the children of our society.

On this occasion I thank all my teachers of Primary section for all their hard work and energy they put into their job in this current pandemic situation. In this truly difficult situation you have gone above and beyond to ensure that learning of our students is not hampered. I salute your tireless efforts you are making from taking online classes to conducting online activities or all the efforts you are making to take all the children with different pace and circumstances along.

कक्षा 1 का स्वागत

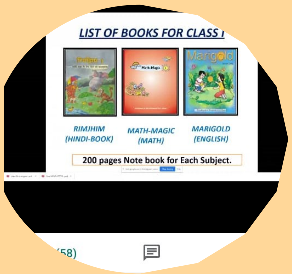

ONLINE CLASSES A NEW WAY OF EDUCATION BY MRS. RENU MISHRA , PRT

Online classes --- a new way of education .

The concept of traditional education has changed radically within the last couple of years. Being physically present in a classroom isn't the only learning option anymore — not with the rise of the internet and new technologies . Nowadays, you have access to a quality education whenever and wherever you want, as long as you have access to a computer. We are now entering a new era — the revolution of online education.Online classes though was confined to higher education but due to pandemic COVID -19 now even primary classes are also going online as we can not hinder our education or studies.

It's accessible:

Online education enables you to study or teach from anywhere . This means there's no need to commute from one place to another, or follow a rigid time table. Our teachers are also taking classes in the evening as per the suitability of the student .

Today students think that online learning is better than the traditional classroom experience though they miss the school environment .Every student must assess their unique situation and decide according to their needs and goals, and while this alternative to traditional education is not for everyone, it's still a convenient option with virtually endless options .

Renu Mishra (PRT)
K.V IIT Kanpur.

शिक्षा– श्रीमती पूनम सिंह,संस्कृत शिक्षिका

शिक्षा

" येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म:|
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता: मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ||"

शिक्षा विद्याया: पर्याय पदम् एव अस्ति| शिक्षां विना मानव जीवनं व्यर्थम अस्ति| शिक्षा मानवजीवनस्य समाजस्य राष्ट्रस्य च विकासार्थं सर्वोत्तमं साधनम् अस्ति| शिक्षाया: महत्त्वं वेदेषु अपि वर्णितमस्ति-

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा|

कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिण:||

प्राचीनकाले ऋग्वेदभाष्ये सायण महोदयेन लिखित:-"स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा|" शिक्षा अस्मान् दिव्य दृष्टिं ददाति सा तिमिरात् प्रकाशं प्रति गमनस्य मार्गं प्रशस्तं करोति |अस्माकं जीवनस्य पूर्णरूपेण परिवर्तनं केवलं शिक्षया एव सम्भवति|शिक्षया एव मानव: क्षुद्रमानसिकताया: बहि: निष्क्रामति|

शिक्षाविहीन: बालक: पक्षविहीन: पक्षी इव भवति | शिक्षापक्षै: स बाल: जगतक्षितिजे उन्मुक्त उडडयनं कर्तुं उच्चस्थानं च स्पर्शितुमपि शक्यते| विवेकानन्दमहोदयेन उक्तमापि-" शिक्षा मनुष्ये व्याप्तपूर्णतां प्राप्तस्य साधनमस्ति|'

शिक्षा कोऽपि तथ्यम नास्ति |तस्यां तु तानि मूल्यानि सन्ति ,यानि मानव:जीवनपर्यन्तं संवाहयति| अमरीकादेशस्य प्रथम राष्ट्रपति: जार्ज वाशिन्गटन महोदयेन कथित:-" शिक्षा तु सा कुञ्चिका अस्ति यया स्वतन्त्रताया: स्वर्णिम् द्वारमुद्घाटयते |" शिक्षया एव मानवस्य सर्वान्गीण विकास: सम्भवति| विद्या शिक्षा वा मानवस्य मुक्ते: द्वारमस्ति- "ऋते ज्ञानान्न मुक्ति: |" शिक्षा कामदुधा इव भवति| यथोक्तम्-

" विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रय:

धेनु: कामदुधा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा|

सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम्

तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु ||"

पूनम सिंह
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (संस्कृत)
केंद्रीय विद्यालय आई आई टी, कानपुर

हिन्दी का विकास –सुश्री कविता सिंह, टी.जी.टी.हिन्दी

हिंदी का विकास - अर्थ एवं महत्त्व

किसी भी जीवंत एवं सतत प्रवाहमान भाषा के लिए उसमें निहित रचनात्मक शक्तियों का निरंतर विकास एवं सुग्राहयता आवश्यक है| कबीर ने भाषा को 'बहता नीर' की संज्ञा से अभिहित किया है| मनुष्य की भावनाओं एवं सांस्कृतिक प्रगति के अनुरूप भाषा के स्वरूप में भी परिवर्तन होते रहते हैं| मन में उत्पन्न भावों की अभिव्यक्ति हेतु अन्य भाषाओं में प्रचलित उपयुक्त शब्द को अपनाना अथवा आवश्यकतानुसार नए शब्द गढ़ लेना ही भाषा की जीवंतता का अनिवार्य लक्षण है| शब्द की शक्ति अनंत है, तभी तो उसे 'ब्रहम' की संज्ञा दी गई है| विस्तृत शब्द भण्डार भाषा की समृद्धि का द्योतक होता है| इस दृष्टि से हिंदी अत्यंत समृद्ध भाषा है| हिंदी ने विभिन्न भाषाओं से आगत शब्दों को आत्मसात करते हुए भाषा की संप्रेषणीयता को असीम विस्तार प्रदान किया है|

इसी क्रम में हिंदी के उद्भव और विकास की संक्षिप्त चर्चा अप्रासंगिक न होगी| वस्तुतः हिंदी का उद्गम संस्कृत से माना जाता है| संस्कृत का मूल स्वरूप वैदिक संस्कृत या 'छान्देस्' के नाम से प्रसिद्ध है| ऋग्वेद की रचना इसी भाषा में हुई| वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत का विकास हुआ| लौकिक संस्कृत से क्रमशः पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि मध्यकालीन आर्यभाषाओं का विकास हुआ| अपभ्रंश से हिंदी विकसित हुई| हिंदी का प्रारंभिक रूप 'खड़ी बोली' अमीर खुसरो की लेखनी के स्पर्श से परिष्कृत होकर विकास के विभिन्न सोपानों को पार करते हुए वर्तमान में भारत की राजभाषा एवं भारतीय जन-मानस की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है|

सहस्राब्दियों पूर्व महात्मा बुद्ध ने कहा था- 'अप्प दीपो भव' अर्थात अपना दीपक स्वयं बनो| निश्चय ही यह कथन अत्यंत सारगर्भित है तथा इसकी व्याख्या विभिन्न सन्दर्भों में की जा सकती है| इस कथन के आलोक में यह कहना समीचीन होगा कि हिन्दी भारतीयों के गौरव एवं राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है| विभिन्न भाषाओं का ज्ञान हमारे बौद्धिक विस्तार का परिचायक है, किंतु अपनी अनुभूतियों एवं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अन्य भाषाओं का आश्रय ग्रहण करने की विवशता कदापि उचित नहीं है| यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि वर्तमान में, न केवल भारत में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है, अपितु विश्व स्तर पर भी उसकी लोकप्रियता में यथेष्ट विस्तार हो रहा है| राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवर्ष में जिस 'भारती' के गुंजायमान होने का स्वप्न देखा था, उसकी अनुगूँज आज सम्पूर्ण विश्व में सुनाई दे रही है|

कविता सिंह
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, आई.आई.टी., कानपुर ।

READING HABITS BY MRS.MALINI KAPOOR,PRT

READING HABITS

As we are aware that of all the four language skills Listening, Speaking, Reading and Writing it is Reading which has been recognized to be one of the primary skills to be mastered in language. Perhaps that is the reason why it has been given a lot of importance from the early stages of learning. Reading can open up a wealth of information and knowledge to young learners.

Reading is an exercise for the mind. It helps us to calm down and relax, opening doors of new knowledge to enlighten our minds. Children who read, grow up to have better cognitive skill and comprehension of things around them. One of the primary benefits of reading is its ability to develop critical thinking skills which helps to make important day to day decisions..To strengthen the habit of reading pronunciation ,facial expression,phonetic,voice modulation and proper use of grammar should be practiced regularly. The more you read, the more imaginative you become. It is well said

" The greatest gift is a passion for Reading."

Malini Kapoor

PRT

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी–श्रीमती पूनम सिंह, टी.जी.टी. संस्कृत

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी

हिन्दी संरक्षणार्थ हिन्दी पखवाड़ा हम मना रहे।
तदोपरान्त पराई सी हिन्दी को भुला रहे॥
सितम्बर मास में हिन्दी का गौरव हम बताते हैं,
बाकी महीनों में अंग्रेजी का महत्व हम सिखाते हैं।

मित्रों- हिंदी की उपेक्षा देख मन में टीस सी उठती है,
हिन्दी प्रेम की पीड़ा कविता बन अधरों से फूटती है.
भावातिरेक में हिन्दी प्यार उमड़ आता है,
पर यथार्थ के धरातल पर केवल सच नजर आता है॥

हिंदी के अस्तित्व पर खतरा है मंडरा रहा।
अंग्रेजी का वर्चस्व दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा॥
अंग्रेजी अपने विस्तार पर दर्प से इतरा रही
हिन्दी अपनी दुर्दशा पर अश्रु है बहा रही॥
राजनेता स्वार्थपरक वोट की रोटियाँ हैं सेक रहे,
हिन्दी को रोज-रोज पीछे हैं धकेल रहे॥

जन जन के ख्वाबों ख्यालों की भाषा है हिन्दी।
भारतीय सभ्यता संस्कृति की परिचायक है हिन्दी॥
सभी भाषाओं को अपने आप में समेटती है हिन्दी।
सूर, कबीर, तुलसी, जायसी का गौरव है हिन्दी॥

सजग हो जाओ राष्ट्र के भावी कर्णधारो
तुम ही हो हिन्दी हिन्दोस्ताँ के रखवाले।
यदि हिन्दी के अस्तित्व को मिटाओगे
निज अस्तित्व को मिटाकर, आप ही पछताओगे॥

ONLINE TEACHING BEST PRACTICES

कविता डा.आर.के.कटियार, टी.जी.टी.गणित की कलम से

मुलाकात होती थी सबसे
जब बजते सुबह के साढ़े सात
हँसी ठिठोली भी करते थे
मिला के सबसे हाथ में हाथ
लिये रजिस्टर जा रहे थे
सारे अपनी अपनी क्लास
कौन-कौन प्रजेन्ट आज है
किसने भिजवाया अवकाश
हो गयी पढ़ाई थी पूरी
शुरू हो गये थे इम्तहान
सूक्ष्म कोरोना के आने से
लाकडाउन का हुआ ऐलान
मचा दिया इसने हड़कम्प
जाँच कराकर आये ट्रम्प
तकनीकी सब हो गयी डम्प
थम नहीं रही है इसकी जम्प
मन्दिर मस्जिद चर्च गुरुद्वारे
बन्द पड़े हैं सारे के सारे
दुनियाँ भर के नर्स डाक्टर
सभी कोरोना से हैं हारे
सारे साधन हो गये फेल
रुकी पड़ी दुनियाँ की रेल
सूक्ष्म कोरोना ने खेला खेल
बन्द हो गया अपनों से मेल
बचा न देश का कोई कोना
जहाँ न फैला हो कोरोना
बार-बार है हाथों को धोना
नहीं पड़ेगा अपनों को खोना
बार-बार हाथों को धोकर
करदो इसको चकनाचूर
सिर पर रखकर पैर कोरोना
भाग जायेगा कोसों दूर

डा॰ राज किशोर कटियार

वर्चुअल15 अगस्त २०२०

Caption

POEM BY MS.PRIYANKA TIWARI , PGT ENGLISH

What is a life

Life is a tale of strife
All human beings have to survive.
Everyone wants to touch the sky;
Knowing the ability dull or spry.

Let's take all a pledge
We'll not twist our tongue to grudge.
We'll not tend our bleeding leg;
Be happy in filthy and torn clothes.

Prove the worth of human being
Do such a thing ,can be seen.
Touch the pinnacle of success;
Exhaust all measures of success.

Be thankful to the Supreme power
Given us a birth as a super power .
Now pay the debt of this land;
Move forward and join hand in hand.

Miss Priyanka Tewari
PGT(ENG)KV IIT KANPUR

राष्ट्रीय खेल दिवस 29.08.2020

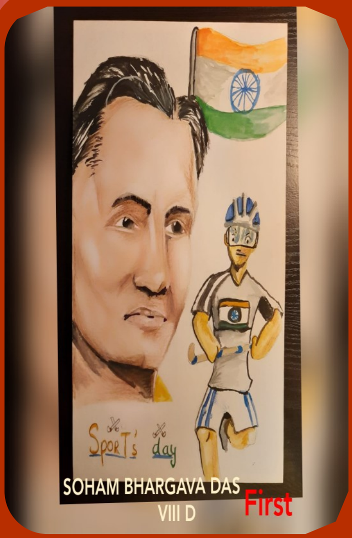

SOHAM BHARGAVA DAS VIII D First

SARTHKI KATIYAR V B First

SHRADDHA SINGH CHANDEL XII C First

शिक्षक दिवस कविता —श्री प्रदीप सिंह , टी. जी.टी.सा.वि.

ये जो वक्त है इसमें तुमको नहीं रोना
हिम्मत से लड़ना / पढ़ना हैं, मायूस नहीं होना
क्या हुआ जो हम मिल नहीं पाते अब
पहले से ज्यादा पाना है कुछ भी नहीं खोना ॥

जो तुम चहकते और बहकते थे
तो हम भी गरजते और बरसते थे
जो रूक गया वो स्कूल का आना जान
क्या बंद हो गया वो नया दोस्त बनना और बनाना ॥
ये जो वक्त है इसमें तुमको नहीं रोना
हिम्मत से लड़ना / पड़ना है, मायूस नहीं होना
क्या हुआ जो जमाना तेरे खिलाफ हैं
हम तो तेरे साथ अभी भी बे हिसाब हैं
संकल्प यही, पूरा करेगें हम अब भी
तेरी आँखों मे, भविष्य के जो ख्वाब हैं ॥
ये जो वक्त है इसमें तुमको नहीं रोना
हिम्मत से लड़ना / पढ़ना है मायूस नहीं होना

हमने अब तक तुम्हे डरना नहीं सिखाया
हमने अब तक तुम्हे हारना नहीं सिखाया
ये जो तेरे अंतर्मन साहस की ताकत हैं
हमने अब तक तुम्हे इसे कम करना नहीं सिखाया ॥

ये जो वक्त हैं इसमें तुमको नहीं रोना
हिम्मत से लड़ना / पढ़ना है मायूस नहीं होना

नयी समस्यावो से निकल कर जीवन बनाना है
खुद समझना और औरो को समझाना हैं
कोरोना एक नयी उम्मीद हैं सफलतावो की
कोरोना नहीं हमारी बेड़ियाँ और बहाना हैं ॥

ये जो वक्त हैं इसमें तुमको नहीं रोना
हिम्मत से लड़ना / पड़ना हैं, मायूश नहीं होना ।
दो गज की दूरी , मास्क जरुरी
फिट India रन India से स्वस्थ जरुरी
इन सब चीजों को ध्यान मे रख कर जागना सोना
हिम्मत से लड़ना / पढ़ना है मायूस नहीं होना

ये जो वक्त हैं इसमें तुमको नहीं रोना
हिम्मत से लड़ना / पढ़ना है मायूस नहीं होना

ई शिक्षा-श्रीमती रितु त्रिपाठी,पी.जी.टी. वाणिज्य

ई-शिक्षा : प्रयास तथा चुनौतियां

ई-शिक्षा से क्या तात्पर्य है?

- ई-शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है।
- ई-शिक्षा के विभिन्न रूप हैं, जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग या कंप्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि शामिल हैं। आज से जब कई वर्ष पहले ई-शिक्षा की अवधारणा आई थी, तो दुनिया इसके प्रति उतनी सहज नहीं थी, परंतु समय के साथ ही ई-शिक्षा ने संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था में अपना स्थान बना लिया है।

ई-शिक्षा बढ़ाने हेतु सरकार के प्रयास

- **स्वयं (SWAYAM)**
- स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स (SWAYAM) एक एकीकृत मंच है जो स्कूल (9वीं- 12वीं) से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है। अब तक SWAYAM पर 2769 बड़े पैमाने के ऑनलाइन कोर्सेज़ (Massive Open Online Courses- MOOC) बड़े पैमाने पर ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम) की पेशकश की गई है, जिसमें लगभग 1.02 करोड़ छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया है,NCERT कक्षा IX-XII तक के लिये 12 विषयों में स्कूल शिक्षा प्रणाली हेतु बड़े पैमाने पर ऑनलाइन पाठ्यक्रमों (Massive Open Online Courses- MOOCs) का मॉड्यूल विकसित कर रहा है।

•स्वयं प्रभा (SWAYAM Prabha)

•यह 24X7 आधार पर देश में सभी जगह डायरेक्ट टू होम (Direct to Home- DTH) के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चैनल प्रदान करने की एक पहल है।इसमें पाठ्यक्रम आधारित पाठ्य सामग्री होती है जो विविध विषयों को कवर करती है।

वर्चुअल लैब (Virtual Lab)

•इस प्रोजेक्ट का उपयोग प्राप्त ज्ञान की समझ का आकलन करने, आँकड़े एकत्र करने और सवालों के उत्तर देने के लिये पूरी तरह से इंटरेक्टिव सिमुलेशन एन्वायरनमेंट (Interactive Simulation Environment) विकसित करना है।NCERT द्वारा ई- रिसोर्सेज़ (eResources जैसे ऑडियो, वीडिओ इंटरएक्टिव आदि) के रूप में विकसित अध्ययन सामग्री को वेब पोर्टल्स के माध्यम से हितधारकों के साथ साझा किया गया है। **उदाहरण के लिये-** स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स (SWAYAM), ई- पाठशाला (ePathshala), नेशनल रिपोज़िटरी ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज़ (NROER) और मोबाइल एप्लीकेशंस।

ई-शिक्षा की राह में चुनौतियाँ

- बिना आत्म अनुशासन या अच्छे संगठनात्मक कौशल के अभाव में विद्यार्थी ई-शिक्षा मोड में की जाने वाली पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं।
- छात्र बिना किसी शिक्षक और सहपाठियों के अकेला महसूस कर सकते हैं। परिणामस्वरूप वे अवसाद से पीड़ित हो सकते हैं।
- खराब इंटरनेट कनेक्शन या पुराने कंप्यूटर, पाठ्यक्रम एक्सेस करने वाली सामग्री को निराशाजनक बना सकते हैं।
- भारत में बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी का अभाव व इंटरनेट की कम गति ई-शिक्षा की राह में सबसे बड़ी चुनौती है।
- वर्चुअल क्लासरूम में प्रैक्टिकल या लैब वर्क करना मुश्किल होता है।
- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की भांति विद्युत व्यवस्था का अभाव है, जो ई-शिक्षा में रुकावट बन सकती है।

रितु त्रिपाठी (स्नातकोत्तर शिक्षक वाणिज्य)

केन्द्रीय विद्यालय आइ•आइ•टी कानपुर

Innovation in Online Eeducation by Smt. Shahana Rizvi, TGT SCIENCE

INNOVATION IN ONLINE TEACHING

Education technology can make learning more interactive and collaborative—and this can help students to better engage with course material. We as teachers can harness the power of digital devices, apps and tools to increase engagement, encourage collaboration, spark innovation and enhance student learning.

I, under the able guidance and leadership of Sh. R. N. Wadalkar, Principal, KV IIT Kanpur fortunate to have experienced a life changing opportunity as a teacher. I am continuously learning new technologies to meet the demands of the educational sector in this time.

- Since April I used digital platforms like Zoom, Cisco WebEx, Google meet, Google classroom and several others to reach out to the children.
- I, begin the day with a motivational song, inspiring thought or Morning Prayer at the start of class.
- For the students who faced network issues, the topic was revised the next day before the lesson. It was also forwarded through other apps like WhatsApp and Google classroom.
- Made MasterCard's and worksheets that can be delivered to home to the students who do not have the access to device.
- Daily monitoring of attendance was done. The absentees were regularly contacted to ensure their presence in class.
- Kahoot and quizzes apps were used along with Google forms for the assessment purposes so that the students realize that these classes are to be attended regularly and seriously.
- Presented material in PowerPoint form that had a positive impact; used interactive pads for the solving numerical or drawing diagrams, integrating the lessons with YouTube videos.
- Several online PTM's were organized from time to time for receiving and providing feedbacks regarding teaching and learning process.

For me as a teacher, the possibilities are endless: from using simulation tools, Olabs to demonstrate how light travel in different media or how a cyclone develops and other activities. Thanks to technology, the classroom no longer has walls. The learning environment no longer has boundaries.

The central government has also launched the PM e-VIDYA platform, swayam prabha DTH channels , Diksha app which has proved quite beneficial to all category of students. NCERT has also introduced Alternative Academic Calendar which caters to all round development of students.

This is a wonderful opportunity for teachers to equip themselves with all the technical accessories. With the evolution of technology, educational capabilities are changing and growing daily. E-teaching can be a boon if it is conducted in a planned way with short contents, innovative ideas and fostering a participative mode of teaching. Technology in education is therefore simply a catalyst, a tool for conveying lessons whose effectiveness cannot be overlooked.

Shahana Rizvi
TGT science
KV IIT Kanpur

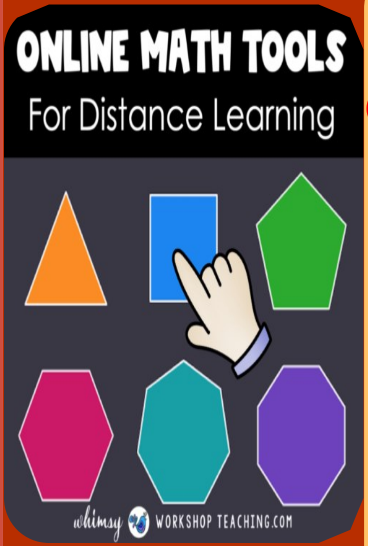

नयी पहल —श्रीमती रंजना तिवारी , पी.जी.टी.गणित

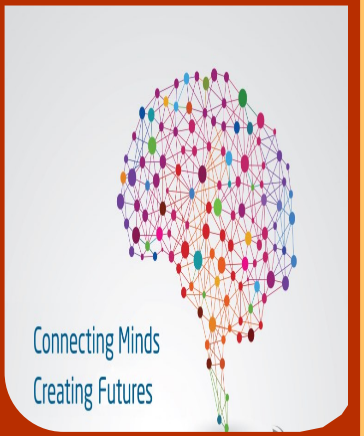

ख्वाहिशों से नहीं गिरते हैं, फूल झोली में,

कर्म की शाख को हिलाना होगा।

कुछ नहीं होगा, कोसने से अंधेरे को,

अपने हिस्से का दीया खुद ही जलाना होगा।

परिस्थितियाँ चाहे जैसी हो, किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हमें स्वयं ही अथक प्रयास करना पड़ता है। अब आज के ही वातावरण को लीजिये, कोरोना वायरस की वजह से कोविड–19 के बढ़ते प्रकोप के कारण पूरा देश लॉकडाउन के कारण घरों की चारदीवारी में कैद हो गया था। इससे शिक्षा जगत सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। वैश्विक महामारी के कारण, जो कार्य जुलाई माह तक सम्पन्न हो जाते थे यथा प्रतियोगी परीक्षा, परीक्षा परिणाम, अगली कक्षाओं में प्रवेश आदि सभी की गति मन्द पड़ गई और वे अभी तक पूर्णतया सम्पन्न नहीं हो पाये हैं।

ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं। शिक्षक विभिन्न माध्यमों से विद्यार्थियों का विषय के प्रति लगााव और उनका मनोबल बढ़ाने के साथ ही उक्त कक्षा के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम के समापन का कार्य भी कर रहें हैं। ऐसे में विद्यार्थियों के भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य का भी पूरा ख्याल रखा जा रहा है।

यह समय विद्यार्थियों के जीवन की दिशा निर्धारण का समय होता है तो ऐसा न हो कि इस महामारी के चलते हमारे देश के भविष्य (विद्यार्थी) की प्रगति बाधित हो, इसका पूरा प्रयास किया जा रहा है।

MOOD—RETROSPECTIVE AND PROSPECTIVE BY MRS. MEETA KHARE,TGT ENGLISH

MOOD-RETROSPECTIVE & PROSPECTIVE

-Meeta Khare (TGT English)

I was the kind of student who was totally dependent on what the teacher taught in class. I never really did study outside school hours. My excuse is: I was a day-dreamer and spent most of my time thinking about future and weaving fanciful stories. If I had to classify myself, it would be that I have visual intelligence. Whatever was taught by the teacher would run in my mind like a film. As a result, I could never understand the ins and outs of Chemistry. Call it the absence of multi-sensory stimulation or…... call it what you will. (By the way, my parents wanted me to become a doctor). Unfortunately, for them their dream couldn't be realized. I hope the readers can understand the reason for my failure. I ended up being a teacher not by conscious thought but because it came to me easily and what's more important- naturally. (A word of advice to student readers- Don't ever opt for the easy path: push your limits and travel the path less travelled by)

Now that I am a teacher myself, I have a question for the people in the field of Chemistry and Geography- Can these subjects be taught in a way that it reaches to children like a film? Is it absolutely necessary to cram up the theories and principles? I wish, the new age teachers can devise ways through which the concepts (at the outset) are taught in a way that captivates a child's mind and imagination so much so that they understand it as easily as they understand stories. Not everything is bad about rote learning, but unfortunately, in my time the assessment of a student was made more on the basis of content than application.

I wish I was fifty years younger. Education sector has undergone an overhaul in the last decade or two and the pandemic time has shown us the power of technology. The student has the world of knowledge at his fingertips. What he is unable to comprehend in classroom is understood through various resources available online. But without a teacher's direction the child might just end up floundering in every which way in the sea of information.

All said and done, the importance of teachers cannot be undermined. He was and continues to remain the architect of a nation. His role is to facilitate and inspire student learning and creativity. He must use the digital age tools to improve student engagement and achievement.

Coming back to where I had started from, 21st century education caters to the needs of my breed of students. There is no dearth of e-content available. With so much talk about the 4 Cs- critical thinking, creativity, communication and collaboration, the teacher also needs to fit into the new age needs. Many teachers are steeped in traditional methods. But the bright side is that they are trying to change and adapt to the new scenario. They have become learners and are learning new ways of teaching.

We all are well aware of the fact that the students are digital natives and the teachers- digital immigrants. All we need to do is be their guide or mentor and not the all-knowing sage.

हिन्दी पखवाड़ा 1 सितंबर से 15 सितम्बर तक

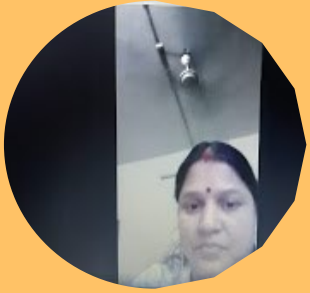

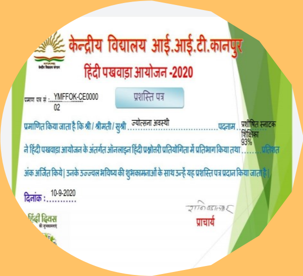

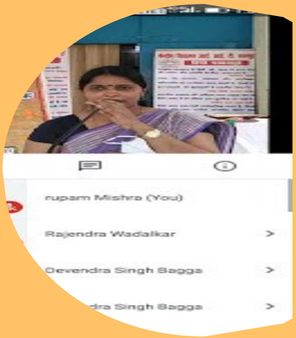

HTTPS://YOUTU.BE/UYXXL9S5UMU

लोक कला — श्रीमती रूपम मिश्रा, टी.जी.आर्ट

लोक कला (एक मौलिक संक्षिप्तका)

लोक चित्रकला साधारण जनमानस की अभिव्यक्ति है। जीवन के सुख - दुख की कथा इसमें निहित हैं। ये हमारी भावनाओं को सीधे तौर पर छूती हैं। ये शुभत्व के प्रतीक हैं। इसी कारण वसुदेव शरण अग्रवाल ने कहा है कि "खाली घर में राक्षसों का वास होता है।

लोक कलाकार लोक अभिकल्पों को चित्रण में प्रयोग करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते रहते हैं। इसलिए अनेक अभिकल्पों में क्षेत्रीय भिन्नता देखने को मिलती हैं। लोक कला शास्त्रीय कला से एक दम भिन्न होती है।लोक कला में देवी देवताओं, पशु पक्षियों, प्रकृति के साथ साथ अलंकारिक अभिकल्पों का चित्रण होता है।

देवी देवताओं पर आधारित अभिकल्प - लोक कला की रचना का मुख्य आधार देवी देवताओं के चित्र होतें है। महिलाएं देवी देवताओं की प्रमुख विशेषताओं का विशेष ध्यान रखती है जैसे शरीर का रंग, वाहन, आसन, हाथों की मुद्राएँ,अस्त्र,वस्त्र तथा आभूषण आदि। इससे अमुक देवताओं को पहचानना बहुत आसान होता है।

पशु पक्षियों पर आधारित अभिकल्प- लोक चित्र के दूसरे आधार पशु-पक्षी तथा जीव-जन्तु है। अनेक पशु पक्षी देवताओं के वाहन होने के साथ ही कुछ उनके प्रतीक रूप में लोक कथाओं से जुड़े हैं।

प्रकृति पर आधारित अभिकल्प - प्रत्येक कला इसके नजदीक होती हैं। लोक कला पूर्णतया प्रकृति पर आधारित है कहावत भी है कि "प्रकृति कला की मां है" लोक कला में पेड़-पौधे, फूल-पत्ती के साथ साथ नदी, तालाब,पर्वत, सूर्य, चाँद, तारें आदि सभी चित्रित होतें है। लोक कला में प्रकृति के तीन रूप हैं। **1- सजावट के रूप में प्रकृति का चित्रण** - सजावट के रूप में चित्र के चौड़े किनारों में फूल पत्ती की बेल बनाकर तथा रिक्त स्थान में पेड़ पौधे बनाकर भर देना। **2-देवी देवता के रूप में प्रकृति का चित्रण** - लोक चित्रों में सूर्य चन्द्र इनके आँख, नाक, मुख यहां तक कि मूँछ बनाने की सोच भी लोक कला की ही देन हैं। नदी, पहाड़, अनेक वृक्ष आदि देवी देवता के रूप में बनते है। **3-प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति का चित्रण** - प्रकृति की अनेक चीजें व पेड़ पौधे किसी देवता प्रतीक (चिन्ह) के रूप में बनाईं जाती हैं कई बार प्रतीकात्मक चित्रण वास्तविक रूप से एक दम भिन्न होते हैं

लोक कला में अलंकरण चित्रण - अनेक क्षेत्रों में चित्रण अलंकारिक होते है। राजस्थान, उत्तरांचल आदि राज्यों में लोक अभिकल्प अत्याधिक अलंकारिक होतें है। अलंकार में कलश,शंख,चक्र, पुतरियां (स्त्री पुरुष), कमल, बेल, वृक्ष आदि।

इस प्रकार सर्वव्यापी लोक चित्रण की कुछ जानकारी साझा हुईं। आज के आधुनिकतम शैली में लोक अभिकल्पों का महत्व कम नहीं हुआ है। ये घर से निकल कर सजावटी रूप में बाजार को सबल ढंग से आकर्षित कर रही हैं आज लोक कला गांव से निकल कर शहर के घर-घर में दिखाईं देतीं हैं।

लोक कला चित्रण के प्रति आकर्षित हो रहे छात्रों को इसका समुचित अध्यन तथा अभिकल्पों का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। इसमें पुस्तकें, प्रर्दशनी, संग्रहालय, लोक कलाकारों से संपर्क, गांव अथवा क्षेत्रों का भ्रमण आदि सहायक हो सकते हैं।

डॉ. रुपम मिश्रा
कला अध्यापिका
आई. आई. टी कानपुर

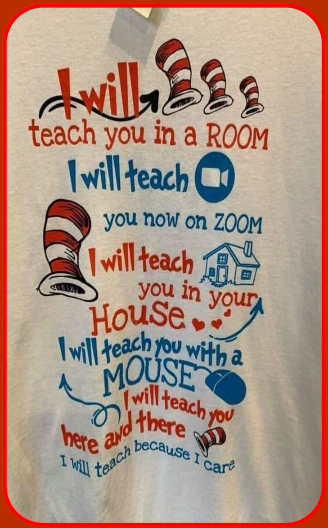

OUR TEACHERS OUR HERO#

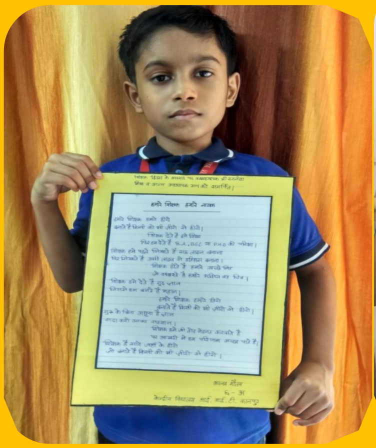

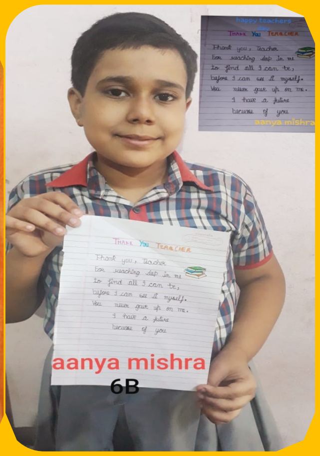

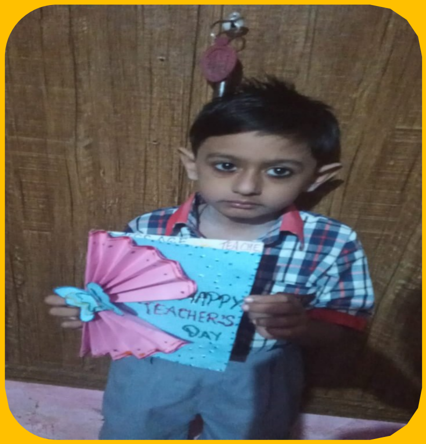

HTTPS://YOUTU.BE/UYXXL9S5UMU

WORK OF ART BY DR. RUPAM MISHRA

कला दीर्घा

रूपम के रंग

लोकचित्रों के लिए पहचाना नाम हैं कला की कई विधाओं में माहिर डॉ. रूपम मिश्रा

यूं तो डॉ. रूपम मिश्रा की तूलिका कला का हर रंग बिखेरती है, पर उनकी खास पहचान है लोकचित्र कला में। आइआइटी केंद्रीय विद्यालय में कला टीचर रूपम ने लोकचित्रों को न सिर्फ नए आयाम दिए हैं, बल्कि इटावा के लोकचित्रों पर शोध भी किया है। यही वजह है कि चित्रकला के क्षेत्र में उनकी पहचान सिर्फ कलाकार के रूप में न होकर लोकचित्र कला के संरक्षक के रूप में भी है।

विरासत में मिली तूलिका

बचपन से चित्रकला का शौक रखने वाली रूपम के लिए यह सुखद संयोग था कि उन्हें प्रारंभिक गुरु के रूप में सानिध्य मिला मां का। उनकी मां कला टीचर थीं और उन्हें इस बात की परख भी थी कि बेटी अच्छी चित्रकार बन सकती है। रूपम बताती हैं, "मेरी रुचि को देखते हुए मां ने छोटी उम्र से ही रंगों की समझ और संयोजन बताना शुरू कर दिया था। वे जब भी कोई कृति बनातीं उसमें मुझसे भी सहयोग लेतीं। शौक बढ़ा और पढ़ाई में मैंने सब्जेक्ट चुना आर्ट। इसके बाद इसी में पीएचडी की।"

एक लाइन का प्रयोग

रूपम देश की हर शैली के लोकचित्र बनाती हैं। उनके चित्रों की खास बात यह है कि हर चित्र एक लाइन के प्रयोग से बना होता है। रूपम बताती हैं, "एक लाइन में लोकचित्र बनाने का मैंने पहला प्रयोग 1995 में किया था। वीमेंस सिरीज पर बनी लोकचित्रों की लखनऊ ललित कला अकादमी में लगने वाली यह मेरी पहली एकल प्रदर्शनी थी। इसमें हमने पेंटिंग्स को मंथन, मां-बेटी, बहनें, भावनाएं, सखी, अनुग्रह, विचार मंथन, आदि नाम दिए थे।"

मिक्स मीडिया पर काम

रूपम बताती हैं, "मैं हर तरह का वर्क करती हूं, लेकिन मेरी पसंद है मिक्स मीडिया। मैंने वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान से फ्रेस्को वर्क की पढ़ाई भी की है। मुझे प्रयोग करना अच्छा लगता है। गोबर, मिट्टी, दाल, रंग और टाइल्स पर चित्रांकन करना मेरा खास शौक है।"

लोककला संग्रहालय ने सहेजा

रूपम बताती हैं, "मुझे इस बात की खुशी है कि विलुप्त हो रही लोककला के लिए लोग मुझे पहचानते हैं। लोककला पर आधारित मेरी पेंटिंग्स की एक सिरीज को लखनऊ लोककला अकादमी ने प्रदर्शन के लिए संग्रहालय में स्थान दिया है।"

बनानी है कलावीथिका

रूपम कहती हैं, "शहर में चित्रकला की नई प्रतिभाएं हैं और कई ऐसे बड़े नाम भी। जिन्होंने इस विधा पर शहर की पहचान दी है, लेकिन आर्ट गैलरी का अभाव है। ऐसे में कलाकारों को प्लेटफार्म नहीं मिल पाता। मेरी भावी योजना कलावीथिका बनाने की है, जिससे चित्रकला को बढ़ावा मिल सके।"

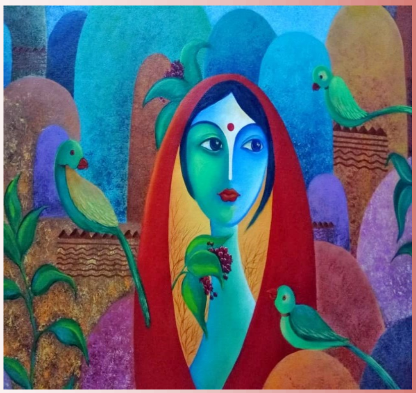

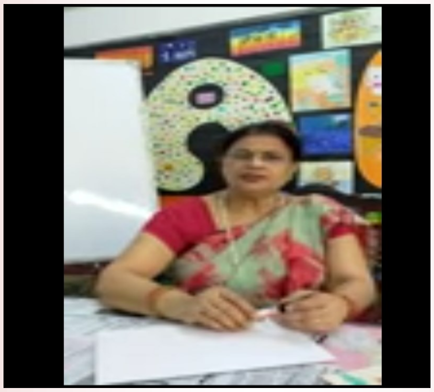

1. https://youtu.be/L0qYI2g_F8M
2. https://youtu.be/FpDo6Ygn9LU
3. https://youtu.be/dh4KdehcoAQ
4. https://youtu.be/taUeehsk3a4
5. https://youtu.be/LADYPXbLYrM

WORK OF MUSIC TEACHER —-SMT. SHALINI SAXENA

लेख

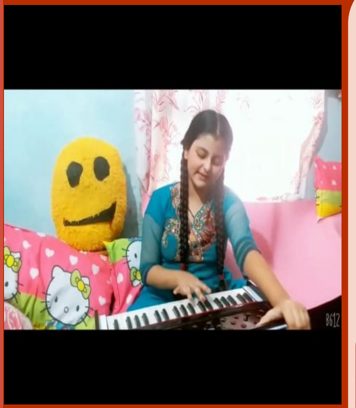

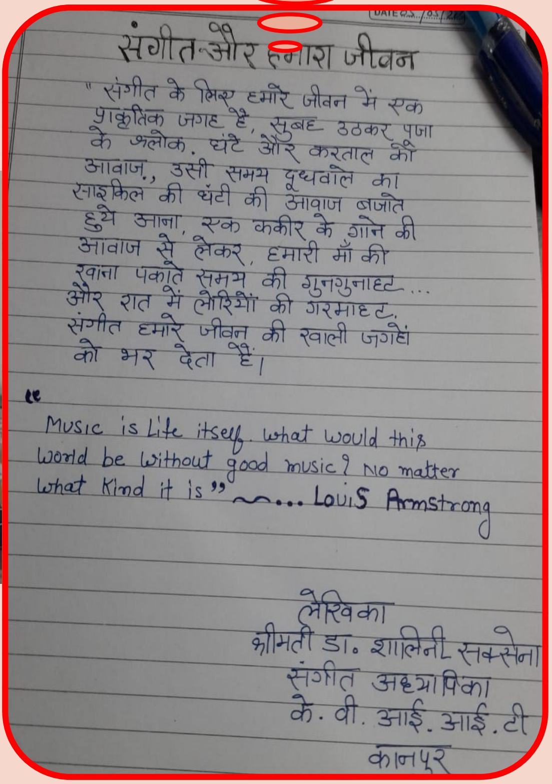

संगीत और हमारा जीवन

"संगीत के लिए हमारे जीवन में एक प्राकृतिक जगह है, सुबह उठकर पूजा के श्लोक, घंटे और करताल की आवाज, उसी समय दूधवाले का साइकिल की घंटी की आवाज बजाते हुये आना, एक फकीर के गाने की आवाज से लेकर, हमारी माँ की खाना पकाते समय की गुनगुनाहट... और रात में लोरियों की गरमाहट, संगीत हमारे जीवन की खाली जगहें को भर देता है।

"Music is life itself. What would this world be without good music? No matter what kind it is" ~... Louis Armstrong

लेखिका
श्रीमती डा. शालिनी सक्सेना
संगीत अध्यापिका
के. वी. आई. आई. टी
कानपुर

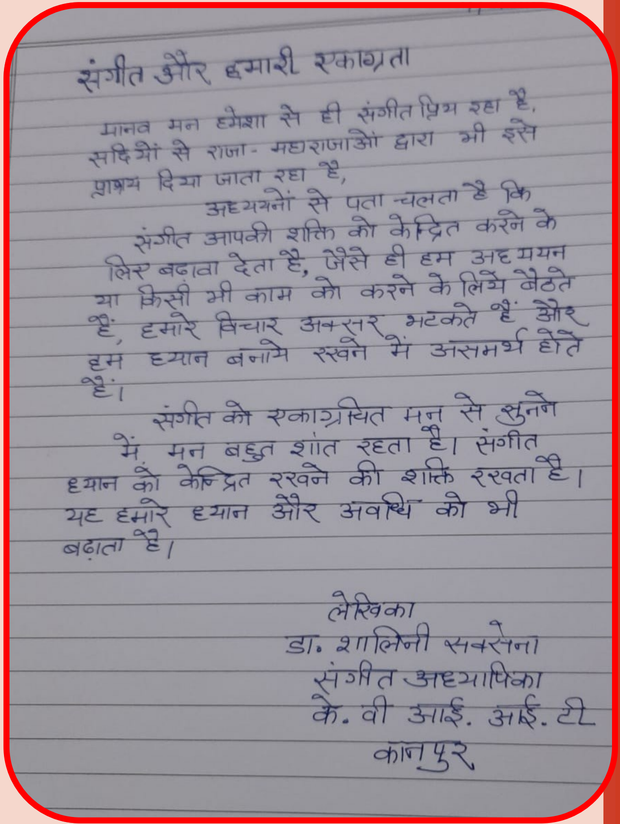

संगीत और हमारी एकाग्रता

मानव मन हमेशा से ही संगीत प्रिय रहा है, सदियों से राजा-महाराजाओं द्वारा भी इसे प्राश्रय दिया जाता रहा है,

अध्ययनों से पता चलता है कि संगीत आपकी शक्ति को केंद्रित करने के लिए बढ़ावा देता है, जैसे ही हम अध्ययन या किसी भी काम को करने के लिये बैठते हैं, हमारे विचार अक्सर भटकते हैं और हम ध्यान बनाये रखने में असमर्थ होते हैं।

संगीत को एकाग्रचित मन से सुनने में मन बहुत शांत रहता है। संगीत ध्यान को केन्द्रित रखने की शक्ति रखता है। यह हमारे ध्यान और अवधि को भी बढ़ाता है।

लेखिका
डा. शालिनी सक्सेना
संगीत अध्यापिका
के. वी. आई. आई. टी
कानपुर

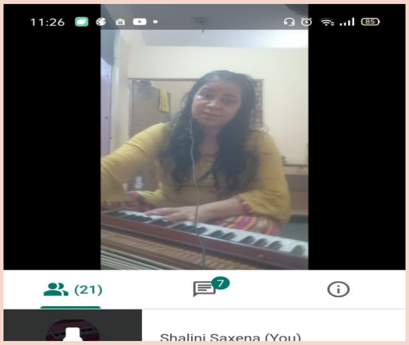

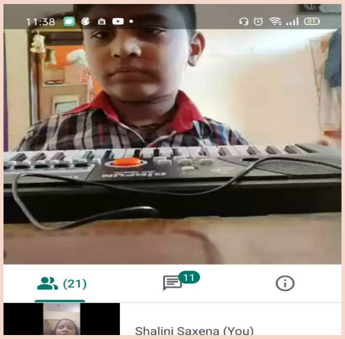

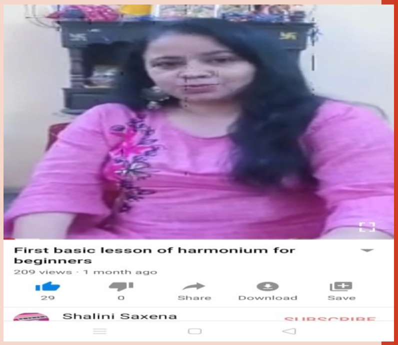

1.https://youtu.be/uYXXL9s5UMU

2 .https://youtu.be/DzYN-GUrKkM

3.https://youtu.be/DzYN-GUrKkM

4.https://youtu.be/hWz64dqkVUg

LIBRARY ACTIVITIES

वर्चुअल लाइब्रेरी

Libkviitknp.blogspot.com

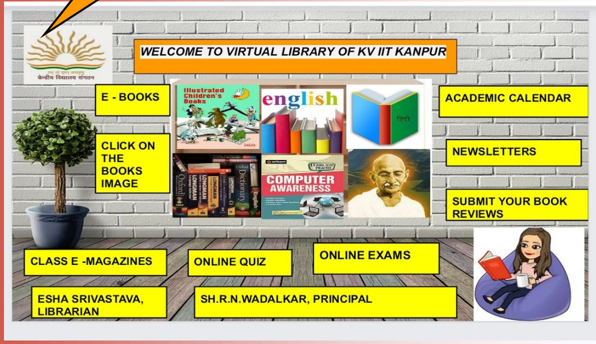

ई समाचार पत्रिका

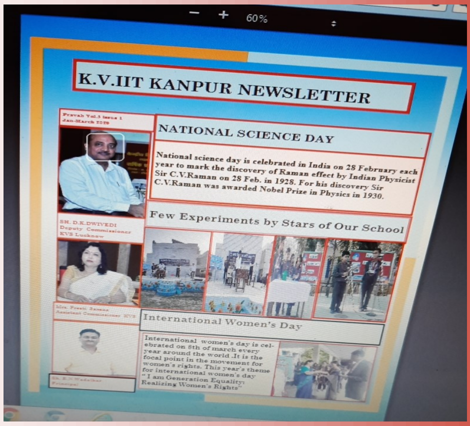

आनलाइन प्रश्नोत्तरी व पुस्तक समीक्षा

PPT

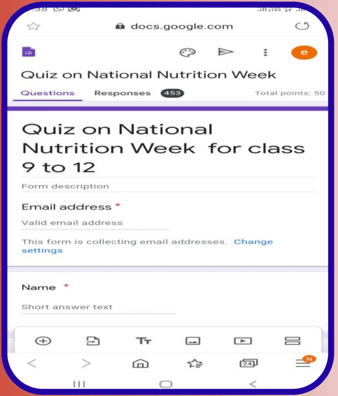

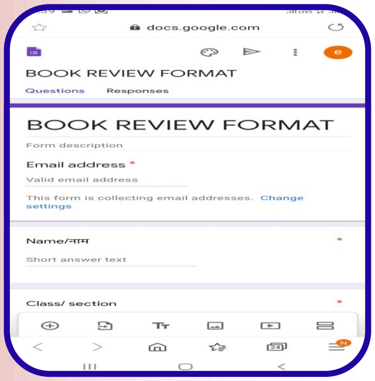

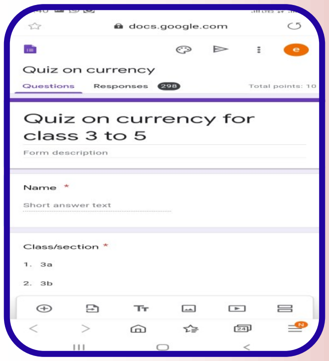

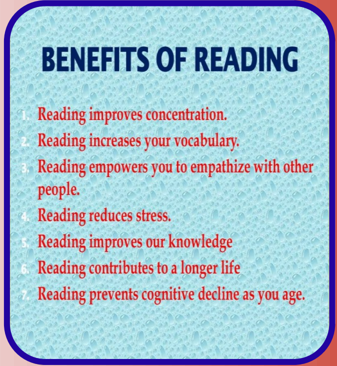

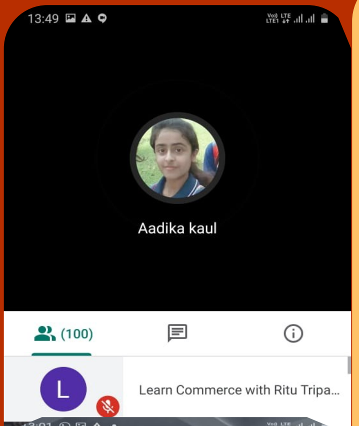

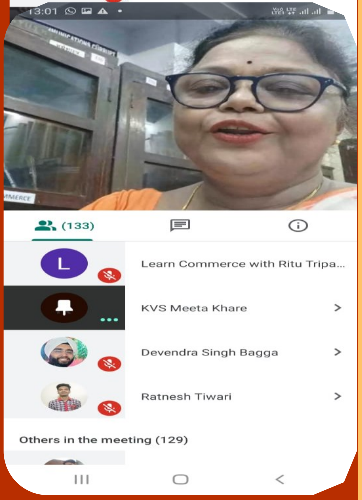

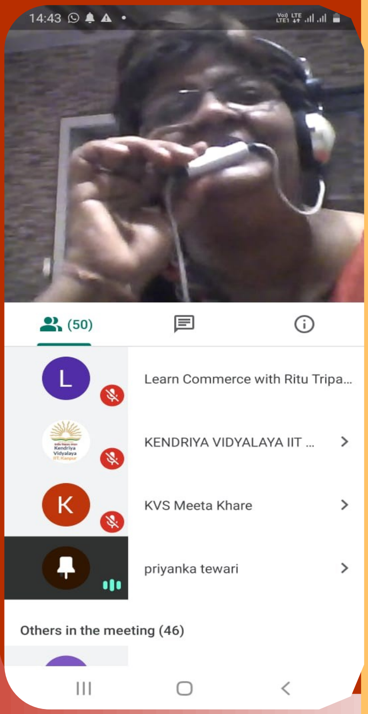

ONLINE TEACHING BY SMT. SNEHLATA SHARMA TGT MATHS

Since the COVID-19 pandemic has disrupted the normal lifestyle of people across the world, the virtual world has come to the rescue. Moreover best efforts are being made by teachers to make a smooth transition to the virtual world. Teachers are making continuous efforts to provide customized teaching learning materials suitable for online classes to facilitate the students. We the teachers have accepted the challenge and learning new things to make our classroom more inter-active and interesting.

शिक्षक दिवस कार्यक्रम 05 सितंबर

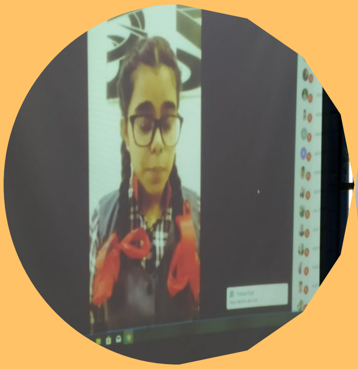

मीडिया के पन्नों से

अभिभावक बने परीक्षक बच्चे दे रहे परीक्षा

जासं, कानपुर : केंद्रीय विद्यालय आइआइटी के बच्चों की परीक्षाएं ऑनलाइन शुरू हो गई हैं। अभिभावक परीक्षक की भूमिका निभा रहे हैं, ताकि बच्चे नकल न कर सकें। दो पालियों में सुबह सात से नौ बजे तक और शाम को छह से आठ बजे तक परीक्षा हो रही है। खास बात ये है कि बच्चों की उत्तरपुस्तिका उसी दिन जंच रही हैं। ये संभव हो रहा है एक सॉफ्टवेयर की मदद से जिसमें सभी बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर फीड हैं। केवी आइआइटी के प्रधानाचार्य आर एन वडालकर ने बताया कि कोरोना के बढ़ते प्रभाव से बच्चों की पढ़ाई का नुकसान न हो इसलिए परीक्षाएं [illegible] कराई जा रही हैं।

आज

केवी आईआईटी में खिलाड़ियों को ई-प्रमाणपत्र देकर किया सम्मानित

कानपुर, 29 अगस्त। विश्वस्तर पर ख्यातिप्राप्त हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में केंद्रीय विद्यालय आई.आई.टी., कानपुर में 'राष्ट्रीय खेलकूद दिवस' का आयोजन किया गया। कोविड-19 संक्रमण के कारण वर्तमान में विद्यालयों में शिक्षण कार्य स्थगित है। अतः विद्यालय में आयोजित इस संक्षिप्त कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया। मुख्य अतिथि विद्यालय के प्राचार्य आर.एन. वडालकर ने दीप प्रज्वलन एवं मेजर ध्यानचंद के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान विद्यालय के पूर्व क्रीड़ा शिक्षक नरेश कुमार चौधरी ने अपने उद्बोधन में मेजर ध्यानचंद की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए जीवन में खेलों के महत्व से अवगत कराया। इसी क्रम में प्रदीप कुमार ने जीवन के विभिन्न पक्षों पर खेलों के सकारात्मक प्रभाव का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों को खेलों में रूचि जागृत करने हेतु प्रेरित किया। राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता तीन वर्गों (कक्षा-5, कक्षा 6-8 तथा कक्षा 9-12) में आयोजित की गई। प्रतियोगिता सार्थकी कटियार, सोहम भार्गव एवं श्रद्धा सिंह ने क्रमशः प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त तीनों वर्गों के अंतर्गत ऑनलाइन स्पोर्ट्स क्विज का आयोजन भी किया गया, जिसमें 80 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वाले छात्र/छात्राओं को ई-प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

केवी आईआईटी के प्राचार्य आर.एन. वडालकर

जीवन में शिक्षक की अहमियत बताई

कानपुर। केंद्रीय विद्यालय आईआईटी में ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विद्यालय के नामित अध्यक्ष और आईआईटी में भौतिक विज्ञान विभाग के प्रो. हर्षवर्द्धन वानरे ने बच्चों को उनके जीवन में शिक्षक की अहमियत बताई। इस मौके पर प्राचार्य आरएन वडालकर ने विद्यालय की विद्यार्थी परिषद में चयनित विद्यार्थियों को शपथ भी दिलाई। इनमें कक्षा 12 की काव्या तिवारी व रत्नेश तिवारी को स्कूल कैप्टन, कक्षा 11 के रवींद्र सिंह व प्रज्ञा द्विवेदी को वाइस कैप्टन, कक्षा 12 के विक्सांत वैष्णव अग्निहोत्री व साक्षी कुशवाहा को स्पोर्ट्स कैप्टन की शपथ दिलाई गई। इस दौरान बच्चों ने ऑनलाइन सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी दी। विद्यालय के शिक्षक राजकिशोर कटियार और प्रदीप सिंह ने भी कविता पाठ किया। आयोजन में स्मृति मिश्रा, ख्याति सिंह, निहारिका सिंह और विनायक गुप्ता का विशेष सहयोग रहा।

नदियों, पहाड़ों व रेगिस्तान का मिल रहा ज्ञान

आइआइटी केंद्रीय विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक प्रदीप सिंह छात्रों को मानचित्र के जरिए नदियों, पहाड़ों व रेगिस्तान के बारे में बता रहे हैं। इसके लिए उन्होंने व्याख्यान का अलग स्लॉट ले रखा है। वीडियो के माध्यम से ही छात्रों को वनस्पतियों का ज्ञान दे रहे हैं। इतिहास और नागरिक शास्त्र भी पढ़ाया जा रहा है।

केवी, आईआईटी में समारोह : केंद्रीय विद्यालय आईआईटी में प्रिंसिपल आरएन वडालकर ने विद्यार्थी परिषद के सदस्यों को शपथ दिलाई। अध्यक्ष प्रोफेसर हर्षवर्धन वानरे ने शिक्षक दिवस के महत्व की जानकारी दी।

सरय नारायण में सम्मान समारोह :

खेल दिवस पर लाइव प्रसारण : राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर केंद्रीय विद्यालय आइआइटी में मेजर ध्यानचंद की जयंती पर लाइव कार्यक्रम किया गया। प्राचार्य आरएन वडालकर ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। क्रीड़ा शिक्षक नरेश कुमार चौधरी मौजूद रहे। इस दौरान ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं।

"एक अच्छा शिक्षक एक मोमबत्ती की तरह होता है, वह खुद प्रज्वलित होकर दूसरों को रास्ता दिखाता है।"